सिद्धी, साधना और चमत्कार

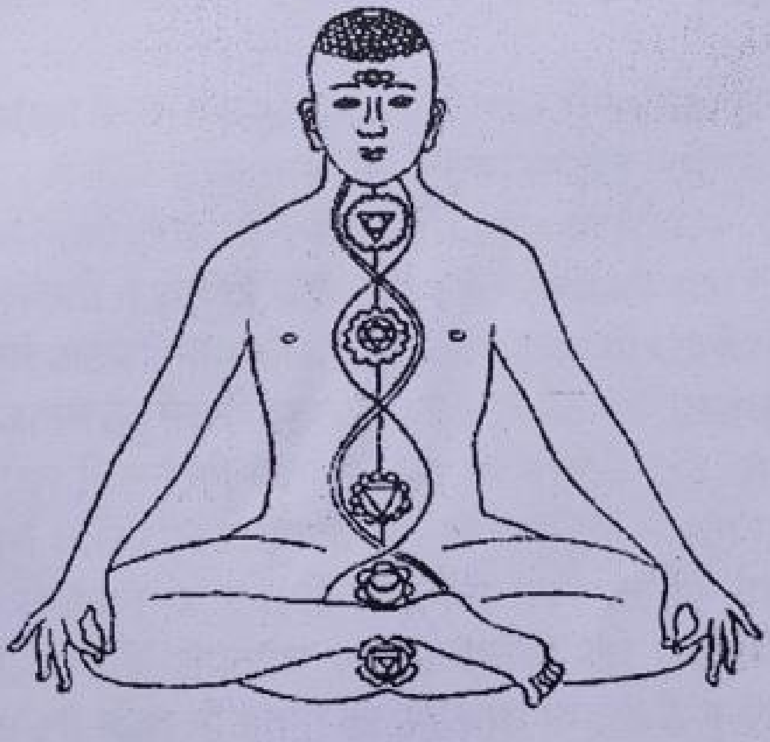

लेखक : **संजय जैन** (गुरुजी)

स्पंदन पारमार्थिक शिक्षा एवं सामाजिक उन्नयन समिति (रजि.)

उज्जैन (म.प्र.)

सिद्धी, साधना और चमत्कार

क्या ये सिद्धी साधना चमत्कार–वरदान–श्राप इत्यादि अलौकिक घटनाओं का इंसान के दैनिक क्रियाकलापों में कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दखल रहता है ? या इनसे व्यक्ति विशेष के भाग्य का परिमार्जित परिणाम का स्वरूप बदल सकता है। यदि नहीं, तो फिर इन सबके अस्तित्व के आखिर क्या मायने है ? और वास्तव में इनका मनुष्य की दैनिक जीवन की गतिविधियों में प्रभाव अगर होता है तो आखिर किस तरह ?

मैं स्वयं इन अलौकिक अवस्थाओं से एक नहीं कई बार रूबरू हुआ हूँ। कई–कई बार अलौकिक घटनाओं का मैं स्वयं साक्षी हूँ। एक नहीं हजारों बार उन दिव्य रश्मिओं की तरंगों ने मेरे स्वयं के अन्तर्मन में स्पंदन पैदा किये है। कई दिव्य संकेतों ने अनेको बार मेरे मन मस्तिष्क पर थाप दी है और कई–कई बार मेरे अल्प दिमाग की नसों को झंझोड़कर भी रख दिया है। इन सबका रहस्य जानने हेतु मेरा व्याकुल मन बैचेन है कि आखिर कब वो परम आनंद की सुमधुर मिलन की बेला मेरे द्वार पर दस्तक देगी, जबकि मेरे जीवन की संपूर्ण श्वाँसों एवं धड़कनों एवं मेरी धमनियों में अनवरत बहने वाले लहु के संचालन के स्वामी परमपिता परमेश्वर से मेरा रूबरू साक्षात्कार हो, क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से अनेकों बार उस परमश्रद्धेय परमपिता ने अपनी दिव्य मौजुदगी का अहसास कराया है परन्तु प्रत्यक्ष दीदार के इन्तजार में मेरी ये पलकें अब तक बैचेन हैं।

हो सकता है शायद ये अवसर अब तक इसीलिये अवघटित नहीं हुआ की मुझ में, या मेरे ज्ञान में, या मेरे कर्म में, या फिर ईश्वर के प्रति मेरी भक्ति और निष्ठा में कहीं ना कहीं कुछ ना कुछ कमी अवश्य ही दृष्टिगत हो रही होगी।

परंतु मैं उसी कमी को आखिर भला स्वयं कैसे दूर करूँ ?

क्योंकि इस संसार की तृष्णा भरी जिंदगी से अब मेरा मोहभंग हो चुका है। वही दिन–रात जीवन जीने की मशक्कत करती दुनियाँ सामने दिखाइ देती है, तो कोई जीवन जीने के बहाने ढूँढ़ता है तो कोई जीवन नहीं जीने के बहाने ढूँढ़ता है। व्यक्ति स्वयं क्या और क्यों चाहता है इसका जवाब आखिर स्वयं उसके पास भी नहीं है। फिर इन सब के मध्य मायावी जिंदगी की पर्तों में घिरकर आखिर उस परम सत्य का सामना भला कैसे किया जा सकता है। हे महाप्रभु आपने अवतारों के रूप में जन्म लेकर समुची मानव जाति को मार्ग तो दिखाया, परंतु शायद आपने वक्त गलत चुना क्योंकि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में तो मानव मात्र की अभिलाषायें सीमित थी और नैतिकता एवं मर्यादा का एक दायरा भी दृष्टिगत होता था। परन्तु आज इस घोर कलियुग में धर्म एवं नैतिकता की सारी मर्यादायें चूर–चूर हो गई है और इंसान स्वयं दूसरे इंसान के खून का प्यासा हो गया है। ऐसे घनघोर विपदा के काल में सनातन सत्य का दिव्य प्रकाश बरसाने वाले हे प्रभु आप स्वयं प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर हमारा मार्ग प्रशस्त कीजिये। क्योंकि अज्ञानतावश हम मनुष्य इस संसार में आपके द्वारा रचित छोटी–छोटी घटनाओं को अनहोनी या अतिशय या चमत्कार का स्वरूप देकर आनंदित एवं प्रफुल्लित होने का झूठा प्रयास कर लेते हैं। परंतु असली चमत्कार तो प्रभु आपके दर्शन में है, आपकी वाणी में है। तो फिर ये सब क्या और कैसे होता है?

क्यों किसी आगंतुक के बारे में पहले से पता चल जाता है। उसका आगे भविष्य क्या और कैसे होगा, उसकी तय रूप रेखा पहले से उकेर दी जाती है, क्यों किसी व्यक्ति विशेष का भाग्य बदलने की अनुमति मिल जाती है। जबकि उसके कर्मबंध इस परिवर्तन की अनुमति नहीं देते हैं। फिर इसके लिये क्या प्रभु सृष्टि का विधि–विधान बदल जाता है या पहले से नियत रहता है और इसका श्रेय मुझ जैसे किसी भी सेवक का

उसकी तपस्या के फलस्वरूप मुफ्त में प्रदान कर दिया जाता है। क्योंकि ये आसान कार्य नहीं है। क्या मुझे इसके लिये गर्व एवं खुशी होना चाहिये की किसी की मदद हेतु आपने मुझे माध्यम बनाया है और अगर ये सच है तो मेरे प्रभु मुझे एक ही नहीं सैकड़ों जन्म में आपकी शक्ति का माध्यम बनना बारम्बार स्वीकार है।

लेकिन प्रभु ये बारिश का रूक जाना, किसी मन्दिर का उद्धार, किसी तपस्वी का उत्थान या किसी का वैवाहिक गठबंधन कराना, भक्ति की शक्ति का भक्त को अहसास कराना, संकल्प शक्ति का आह्वान एवं उसके परिणाम दिव्य दर्शन लौकिक प्रतिमाओं के धर्म की मान्य परम्पराओं के विपरीत आचरण, आकस्मिक घटनाओं का टालना सूक्ष्म संकेत एवं कई–कई बार प्रत्यक्ष संकेत बगैर ग्रंथों के अध्ययन से उनकी सुक्ष्मता के रहस्य को जानना, परिस्थिति अनुसार धार्मिक आचरण, परलौकिक एवं अलौकिक अनुभूति एवं उनकी सुक्ष्म विवेचना का ज्ञान आखिर इन सबके मायने क्या है ? क्या ये एक चमत्कार की परिधी के दायरे में सिमटे हुये शब्द है या फिर इसके भी आगे ऐसा बहुत कुछ है जिसको जानना अभी बाकी है मेरा विनम्र निवेदन ये ही है कि मैं माध्यम बनने को तो तैयार हूँ पर मैं स्वयं माध्यम नहीं बनना चाहता हूँ। मुझे तो इस भवसागर का किनारा मिलना चाहिये, शायद तभी मेरा ये मनुष्य कुल में जन्म लेना सार्थक हो।

क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि निर्वाण प्राप्त करने हेतु एक बार देवाताओं को मनुष्य की योनी में जन्म लेना होगा। इसका आशय ये है की मनुष्य योनी ही वो आधार है जिसकी बुनियाद के बगैर केवल ज्ञान निर्वाण कुण्डलिनी जागरण परमसत्य रूपी दिव्य प्रकाश का साक्षात्कार नहीं हो सकता है। आज जरूरत हे तो सिर्फ इस सत्य को पहचानने की और इस परम सत्य को जानकर इसका उपयोग स्वयं की आत्मा के कल्याण एवं

परकल्याण तथा अन्ततः प्रभु की अनुकंपा प्राप्त करने हेतु किया जा सकता है। और इस परम सत्य के पथ में आनेवाले इस चमत्कारों की तुलना तो राजमार्ग (हाइवे) पर स्थित उन विश्रामालय, भोजनालय प्याऊ – छायादार वृक्ष इत्यादि से की जा सकती है जो की फोरी तोर पर थोड़ी राहत या सुकून तो दे सकते है परन्तु मंजिल याने की लक्ष्य की जगह नहीं ले सकते है। इसलिए बुद्धिमान एवं सच्चे साधक कभी भी इन मायारूपी चमत्कार मे ना उलझकर अपना समूचा ध्यान अपने लक्ष्य पर ही केंद्रित रखते है।

कभी कभी साधक को अपने सत्यमार्ग के पथ पर ये घटनायें सिद्धी स्वरूप में भी अपनी झलक दिखाती है। उनमे से कुछ साधक तो इन सिद्धियों के मायाजाल में उलझकर मंजिल पाने के अपने लक्ष्य से भटक जाते है एवं कुछ इनकी परवाह किये बगैर भी निर्विकार भाव से अपने पथ पर अविचल कदम बढ़ाते रहते है अपनी मंजिल पाने हेतु राह में आने वाली ना ना प्रकार की बाधायें भी उनके होसले को कमजोर नहीं कर पाती है इनके दृढ़ संकल्परूपी निश्चय और अटूट निष्ठा एवं समर्पण के साये में ना ना प्रकार की सिद्धियाँ भी स्वयं साधन बनकर ऐसे साधक की सहायता करती है। साधक के मंजिल प्राप्त करने की राह की मुश्किल धीरे–धीरे कम कर दी जाती है एवं साधक को स्वयं लक्ष्यबोध का स्पष्ट स्वरूप बारम्बार प्रतिबिंबीत करके उसके उत्साह को नया आयाम दिया जाता है। सांसारिक कर्म के लेखाबंधन के अनुरूप उसकी मदद प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निरन्तर की जाती है ताकि साधक का संकल्प और विश्वास अखंड बना रहे। इन्ही माया रूपी सिद्धियों के प्रपंच को कुछ लोग चमत्कार का नाम दे देते है। जबकि ऐसा कुछ वास्तव में बहुत कुछ सिद्धान्तः वैसा नहीं होता है जैसा कि गलत फहमी की वजह से समझ

लिया जाता है क्योकिये तो साधक एवं उससे जुड़े अनुयायियों के लिये एक मार्गदर्शन स्वरूप सहायता है ना की चमत्कार क्योंकि अगर प्रभुजी को चमत्कार अगर करना ही है तो सीधे–सीधे ही उस साधक पर अपनी पूर्ण कृपा दिव्य दृष्टि के माध्यम से बरसा सकता है फिर उस प्रभु को इतना विस्तृत मायाजाल फैलाने की आखिर भला क्या जरूरत है।

इसका जवाब ये है की प्रभुजी द्वारा ये मायाजाल इसलिये रचा जाता है ताकि कमजोर संकल्पशक्ति और निष्ठा वाले साधक जो पहले ही चरण में आत्म नियंत्रण खोने लग जाते है उनका भी नुकसान नही होने पाये और जो पूर्णतः भक्ति भाव से संपूर्ण निष्ठा के साथ धर्मानुकुल आचरण और मर्यादाओं का पालन कर रहे है उनकी उन्नति की राह आसान एवं मंगलकारी हो जाये और उनको अपना लक्ष्य पाने हेतु कम से कम कठिनाइयों का सामना करना पडे एवं उनका सम्पूर्ण त्याग एवं तपस्या का यथोचित परिणाम सूखकारी हो। बस प्रभु की इसी दयारूपी कृपा को अतिशय या चमत्कार नाम दे दिया जाता हे जो की एक अपूर्ण या अर्द्धसत्य है। क्योकि भला ईश्वर को स्वयं उसके द्वारा रचायी गई दुनिया में उसके ही द्वारा रचित मानव को क्या प्रमाण देने के लिये चमत्कार करना पड़ता है ये तो ठीक उसी तरह हास्यपद कथन है की मानो किसी दुकान, संस्थान अथवा घर के मालिक को स्वयं उसके मालिक या स्वामी होने का प्रमाण किसी चमत्कार के रूप में देना पड़े। क्या कोई सेवक अपने मालिक या स्वामी से इस तरह के प्रमाण मांगता है ? जबकि वो उस स्वामी के उपर ही आश्रित है तो फिर उस इंसान की क्या हैसियत होना चाहिये जिसकी रचना स्वयं ईश्वर ने की हो। बस उसी इंसान को सद्बुद्धि दिलाने हेतु उसको उसके कर्मबंध एवं धर्मबंध की मर्यादा का स्मरण करने हेतु वो परमपिता कभी कभार अपनी दिव्य रश्मियाँ किसी व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के लिये प्रकट कर देता है। जो की उस व्यक्ति या स्थान के मद्देनजर आवश्यक होता है उसके अस्तित्व के

सम्मान को बनाये रखने हेतु ना की ईश्वर के स्वयं के लिये उसकी आवश्यकता प्रतिपादित होती है ये प्रकृति और चमत्कार का सुक्ष्तम रहस्य है जिसको जानना बहुत आवश्यक है।

ये ही तथ्य उपर समझाने का प्रयत्न किया गया है कि चमत्कार व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के लिये होते है। स्वयं प्रभु के लिये नहीं क्योंकि ईश्वर तो सर्वव्यापक है और अभी वो स्वयं की प्रमाणिकता दर्शाने हेतु अगर चमत्कार करेगा तो ऐसा चमत्कार वास्तविक चमत्कार होगा जो कि किसी स्थान विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये ना होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एवं उसमे अवस्थित संपूर्ण मानवजाति एवं समस्त प्रकार के जीवो के लिये होगा जिसकी अतिशयता ऐसी भव्यता एवं चमक लिये होगी की उसके दिव्य प्रकाश की चमक की चकाचोध का सामना करना एक साधरण इंसान के बूते के बाहर की बात होगी एवं कुछ बिरले साधक ही उस अत्यंत ही मनोहारी दिल को बाग–बाग कर देनेवाले परम आनंदित दृश्य को प्रत्यक्ष रूप से निहार पाने के उत्तराधिकारी होगे। ऐसे साधको का चयन स्वयं उस ईश्वर द्वारा किया जाता है। और उस चयन का पैमाना होता है उस साधक की पुण्यता परोपकार निष्ठा, सम्पूर्ण जिसमे तनिक मात्र भी शंका आशंका की रत्ती भर भी गुंजाइश ना हो। ऐसे साधक बह्मयोगी की श्रेणी में रखे जा सकते है। क्योकि स्वयं सृष्टि के रचियता श्री ब्रह्माजी उनका चयन करते है उनको इस सृष्टि के रहस्य को परत दर परत समझाने के लिये। फिर पुनः वही कथन साबित होता है कि किसी भी प्रकार का चमत्कार या अतिशय का होना एक अर्द्धसत्य घटना है जिसको घटित होने हेतु आवश्यक परिणाम के लिये व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष जिम्मेदार होता है वो परमपिता नहीं। ये तो इस कलयुग के ईन्सान की फितरत होती है कि वो स्वयं अपनी या स्थान विशेष की महिमा के बखान हेतु उस ईश्वर का सहारा लेता चमत्कार या अतिशय के रूप में। युँ गहराई से या सुक्ष्म दृष्टी से अगर मनन या चिंतन

किया जाये तो आप स्वयं ये ज्ञात सुत्रा अगर पढ़कर इनका भावार्थ अगर समझने का प्रयत्न कर रहे तो आपके उस प्रयत्न को सार्थकता प्रदान करनेवाली बुद्धि पर आखिर नियंत्रण किसका है ?

प्रतिदिन सुबह सूरज का नियत दिशा से नियत समय पर उदित होना आखिर क्या इंगित करता है क्योकि ये दिशाज्ञान पूर्व –पश्चिम इत्यादि तो मनुष्य द्वारा ही बनाये गये है फिर भला उस सूरज को आखिर कैसे पता होगा की उसको रोज इस संसार के ईसांन द्वारा अविष्कृत पूर्व दिशा में ही उगना है इसका अत्यंत सटिक दिशा निर्धारण आखिर किसके हाथ में होता है। वही दूसरी और सूर्य के ठीक समय पर उदित होना आखिर क्या इंगित करता है ? क्या समय दिखाने वाली घड़ी लाखो वर्ष पूर्व बन गई थी ? जवाब आपका निश्चित रूप से ना में ही होगा क्योंकि घड़ी का अविष्कार तो अभी मात्र कुछ वर्षों पूर्व ही हुआ है जबकि सूर्य के आगमन और प्रस्थान के समय की घड़ी तो हजारों लाखो वर्षो पूर्व ही सेट कर दी गई है जिसमे कभी भी तनिक मात्र भी विचलन नहीं होता है।

ठीक इसी तरह से समुद्र में आने वाले ज्वार एवं भाटे का समय आखिर क्यों और कैसे नियत है और कौन सी शक्ति द्वारा निर्बाध रूप से इसका परिसंचालन किया जा रहा है।

इस सब उदाहरणो को अगर छोड़ दिया जाये तो इस लेख को पढ़ने वाले स्वंय आपका जनम होना एवं फिर क्रमबद्ध विकास होकर इस लेख को समझने लायक बुद्धि का विकास होना एवं उस बुद्धि के मनन्न एवं चिंतन प्रक्रिया पर आखिर जोर किसका चलता है ? और फिर एक तयशुदा जीवन जीकर इस जिंदगी की धड़ंकनों का स्थाई विराम लेना इन सबका कुशलतापूर्वक स्वनियंत्रण (Auto Managment) आखिर कैसे सुव्यवस्थित हो जाता है। आखिर ये सब उदाहरण के पीछे छिपी हुई

शक्ति का रहस्य आखिर क्या है ?

फिर वही कथन सामने आता है की व्यक्ति अगर अपने आँख और नाक–कान पूर्णतया रूप से खुले रखे तो उसको इस संसार में घटित होने वाली प्रत्येक घटना में चमत्कार का एक पुट अवश्य दिखाई देगा। चाहे उस चमत्कार का स्वरूप देशकाल और परिस्थितियों के हिसाब से भिन्न–भिन्न पैमाने को धारण किये हो।

शिशु का जन्म होना स्वयं ही इसकी अवधारणा को मूर्तरूप प्रदान करता है की इस चलित ब्रह्माण्ड की सुक्ष्म से सुक्ष्मतर प्रतिक्रियाऐं भी अपने आप में एक चमत्कार रूपी पृष्ठ भूमि अपने आप में समेटे हुये रहती है क्योंकि शिशु के जन्म के बीजारोपण की प्रक्रिया से लेकर उसके क्रमिक विकास की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं का अगर सुक्ष्मतापूर्वक गहन अध्ययन किया जाये तो एक ही नही अपितु कई–कई आश्चर्यजनक स्वचालीत क्रमिक नियंत्रण प्रणाली हमें स्पष्तया दृष्टिगोचर होती प्रतीत होती है । आखिर ये सब प्रक्रियाऐं जिनका क्रम स्वभाविक क्रम से अविरल रूप में सुनियोजित विकास के रूप में बगैर किसी क्रम को बदले एक तयशुदा पैमाने के अन्तर्गत उसके (शिशु) के जन्म से लेकर उसके जीवन हेतु आवश्यक पोषण आहार उसके माँ के रूप में उपलब्ध होना फिर इसके पश्चात शिशु का हँसना, उसका रोना, चिल्लाना एवं धीरे–धीरे घुटनों के बल घिसट–घिसटकर चलना फिर उठना एवं चलने के प्रयास में गिरकर उठना एवं पुनः चलना ये सब प्रक्रियाओं को अवश्य रूप मे एकदम सही परिसंचालित होना क्या स्वयं ही एक चमत्कार सें कम नहीं होता है।

वही इंसान इन प्रकृतिप्रदत्त चमत्कारो की तरह से तो आँख मूँद लेना चाहता है एवं देशकाल परिस्थिति इत्यादि के सापेक्ष में यदा कहा घटित होने वाले चन्द विस्मयकारी बुद्धि के सोच के पैमानो को एक परिमाणित दायरे में ही केद कर लेता है।

स्वयं इंसान का स्वप्न देखना, सोना, उठना एवं दैनिक दिनचर्या के कार्यों को संपादित करना अपने आप में ही विस्मयकारी प्रक्रिया है। क्या किसी मनुष्य द्वारा निर्मित मशीन में इतनी स्व नियंत्रण प्रणाली प्रभावी ढंग से कार्य कर सकती है ? वो भी एक नही कभी–कभी तो सो साल तक भी।

ऐसे एक नहीं हजारों उदाहरण दिये जा सकते है और प्रत्येक उदाहरण ये चीख–चीखकर स्वयं कहता है की ये दुनिया एक चलचित्र के समान और हम सब इंसान उस चलचित्र में ड्रामा करने वाले एक अभिनेता के समान है। जो की प्रत्येक रूप मे प्रत्येक क्रिया–प्रतिक्रिया करता हुआ स्वयं आपको दृष्टिगत होता है जबकि वास्तविकता में उसके अभिनय की प्रत्येक गतिविधि की बागडोर उस निर्देशक याने की डायरेक्टर के हाथो में होती है जो की पर्दे के पीछे से इस संसार रूपी चलचित्र के समस्त पात्रों को निर्देशित कर रहा है। बस इसी में संपूर्ण संसार का मायाजाल परिलिक्षीत होता है और उस निर्देशक की बनाई फिल्म का प्रत्येक पात्र स्वयं होने की गलतफहमी में अपना सारा जीवन का समय गुजार देता है जबकि उसके नियत्रंण की वास्तविक डोर किन्ही अन्य हाथो द्वारा परिसंचालित होती है। बगैर उस निर्देशक की ईच्छा के जिस तरह उस फिल्म कोई भी परिवर्तन नहीं हो सकता है ठीक उसी तरह का कोई भी परिवर्तन इस संसार के चलचित्र के पात्रों के जीवन में बगैर उसकी इच्छा के नहीं हो सकता है। ये ही सृष्टि और उसमें स्थित संसार का नियम है। मनुष्य अगर सिर्फ इस सच को पूर्णतः आत्मसात करके तदानुसार आचरण करने लग जाये तो – शिक्षा चाहे ही है वो अन्य लोगो के लिये भी प्रेरणा का काम कर सकता है। इसके लिये जरूरत है सिर्फ मनुष्य के ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा की एवं साथ ही सम्पूर्ण रूप से किये गये ईमानदार प्रयासो की बस ये ही इस दुनिया के रहस्य को समझने का मूलमंत्र है।

। इति सिद्धम्।